Global E-Journal of Social Scientific Research
Vol. 1| Issue 2| February 2025| pp 53-56

आगरा के ग्रामीण विकास में कृषि श्रमिकों और रोजगार की भूमिका

Author: Rohit Singh
Source: Global E-Journal of Social Scientific Research,
Vol. 1. Issue 2, February 2025, Page Nos. 53-56
Published by: Global Center for Social Dynamic Research

सारांश

आगरा के ग्रामीण विकास में कृषि श्रमिकों और रोजगार की भूमिका शीर्षक के अंतर्गत, इस शोध में आगरा जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि श्रमिकों और रोजगार के अवसरों के माध्यम से होने वाले विकास का विश्लेषण किया गया है। कृषि आधारित रोजगार ग्रामीण क्षेत्रों में आय और जीवन स्तर को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अध्ययन से यह समझ आता है कि कृषि श्रमिकों की स्थिति, उनके कार्य और रोजगार के अवसरों में वृद्धि से न केवल ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार होता है बल्कि क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक विकास को भी प्रोत्साहन मिलता है। यह शोध इस बात पर भी प्रकाश डालता है कि कृषि आधारित उद्योगों के विकास, बेहतर कृषि तकनीकों और सरकारी योजनाओं के प्रभाव से ग्रामीण विकास को किस प्रकार गति मिल सकती है। मुख्य रूप से आगरा जिला की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है जबकि आगरा शहर की अर्थव्यवस्था का मूल आधार वाणिज्य लघु उद्योग और व्यापारिक है मुख्य रूप से फसली गेहूं धान बाजार सरसों पेठा इत्यादि हैं आगरा की कुल अर्थव्यवस्था का 40: उद्योग इसी पर निर्भर है 7200 से अधिक छोटी मात्रा में औद्योगिक इकाइयां जिले की विभिन्न क्षेत्रों में है आगरा शहर चमड़े की समान हस्तशिल्प जारी पत्थर नकाशी चढ़ना इत्यादि कार्य के लिए विशेष रूप से जाना जाता है आगरा की मिठाई पेठा और नाग डाल मोड और गजक भी इसकी प्रसिद्धि का एक कारण है।

मुख्य बिंदु : कृषि श्रमिक,रोजगार ,कृषि आधारित उद्योग ,सरकारी योजनायें व नीतियां ।

1.0 प्रस्तावना:

'आगरा के ग्रामीण विकास में कृषि श्रमिकों और रोजगार की भूमिका' शीर्षक के अंतर्गत इस अध्ययन का उद्देश्य आगरा जिले में कृषि श्रमिकों और रोजगार के अवसरों के योगदान का मूल्यांकन करना है। यह अध्ययन ग्रामीण विकास, सामाजिक–आर्थिक प्रगति और क्षेत्रीय स्थिरता के परिप्रेक्ष्य में कृषि श्रमिकों की भूमिका को समझने का प्रयास करता है। भारत में अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है और उनकी आजीविका का प्रमुख स्रोत कृषि ही है। इस संदर्भ में, कृषि श्रमिकों और उनके लिए सृजित रोजगार के अवसर न केवल ग्रामीण जीवन की आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाते हैं बल्कि समग्र ग्रामीण विकास में भी सहायक होते हैं। आगरा जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि श्रमिक और उनसे संबंधित रोजगार का अध्ययन करना इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह जिला उत्तर प्रदेश के प्रमुख कृषि उत्पादक क्षेत्रों में से एक है। हालांकि, इस क्षेत्र में औद्योगिक और शहरीकरण की गतिविधियां तेजी से बढ़ रही हैं, फिर भी कृषि का ग्रामीण जीवन में महत्वपूर्ण स्थान बना हुआ है। कृषि श्रमिकों का जीवन स्तर, कार्य की प्रकृति, उनके लिए उपलब्ध रोजगार के अवसरों और उनके आर्थिक योगदान का मूल्यांकन करके हम उन कारकों को समझ सकते हैं जो ग्रामीण क्षेत्रों में विकास को प्रभावित करते हैं। ग्रामीण विकास का एक बड़ा हिस्सा इस बात पर निर्भर करता है कि कृ ा कार्य और उससे जुड़े रोजगार के अवसर कितने प्रभावी रूप से ग्रामीण जनसंख्या के जीवन में सुधार ला सकते हैं। इस संदर्भ में, कृषि श्रमिकों की स्थिति, उनकी आय, काम करने की स्थिति, और उनके लिए उपलब्ध सरकारी योजनाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कृषि श्रमिक न केवल खाद्य उत्पादन में योगदान करते हैं बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने और आत्मनिर्भर बनाने में भी सहायक होते हैं। यह अध्ययन इस बात पर भी ध्यान केंद्रित करता है कि कृषि आधारित उद्योग, जैसे कि डेयरी, पशुपालन, खाद्य प्रसंस्करण आदि, किस प्रकार रोजगार के अवसरों को बढ़ाते हैं और ग्रामीण क्षेत्रों के समग्र विकास में सहायक होते हैं। इन उद्योगों के विकास से न केवल कृषि श्रमिकों को रोजगार मिलता है बल्कि उनकी आय में वृद्धि होती है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार होता है। ग्रामीण विकास का महत्वः ग्रामीण विकास का अर्थ है ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवन स्तर में सुधार, उनके लिए रोजगार के अवसरों में वृद्धि और संसाधनों का समान वितरण। यह केवल आर्थिक पहलुओं तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय दृष्टिकोण भी शामिल होते हैं। ग्रामीण विकास में कृषि श्रमिकों की भूमिका का विश्लेषण इस बात को समझने में सहायक हो सकता है कि कैसे रोजगार के अवसर बढ़ाने से क्षेत्रीय संतुलन और विकास की प्रक्रिया को प्रोत्साहन मिलता है। आगरा का आर्थिक ढांचा मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है। यहाँ गेहूं, धान, मक्का, बाजरा, गन्ना आदि प्रमुख फसलें होती हैं। इसके अलावा फल और सब्जियों का उत्पादन भी ग्रामीण आबादी की आय का मुख्य स्रोत है। कृषि आधारित कार्यों में लगे श्रमिकों का जीवन स्तर, उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों की प्रकृति और उनसे प्राप्त होने वाली आय का ग्रामीण विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। कृषि श्रमिकों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण भाग है। अधिकांश कृषि श्रमिक सीमांत किसानों के रूप में काम करते हैं, जिनके पास अपनी भूमि नहीं होती या वे बहुत कम आय अर्जित करते हैं। इन श्रमिकों की स्थिति में सुधार करने के लिए उनके रोजगार के अवसरों में वृद्धि करना और उनके लिए उचित वेतन और कार्य की सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। आगरा के ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि आधारित उद्योगों का विकास न केवल कृषि उत्पादन को बढ़ावा देता है बल्कि रोजगार के नए अवसर भी सृजित करता है। इन उद्योगों में स्थानीय स्तर पर उत्पादन और वितरण से लेकर विपणन तक की प्रक्रियाएं शामिल होती हैं, जो कृषि श्रमिकों के जीवन में सुधार लाने में सहायक होती हैं।

शोध के उद्देष्य :

1.आगरा के ग्रामीण विकास में कृषि श्रमिकों के आर्थिक योगदान का विश्लेषण करना।

2. आगरा जनपद के कृषि श्रमिकों के रोजगार की स्थिति का मूल्यांकन करना।

3. आगरा के ग्रामीण विकास में रोजगार के अवसरों का अध्ययन करना।

4. आगरा जनपद के कृषि श्रमिकों के जीवन स्तर में सुधार के उपायों का विश्लेषण करना।

5. आगरा जनपद के कृषि श्रमिकों की रोजगार में भूमिका और चुनौतियों का अध्ययन करना।

1.1 आगरा की भौगोलिक स्थिति

आगरा का मानचित्र

आगरा, उत्तर प्रदेश राज्य का एक महत्वपूर्ण जिला है, जो अपनी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर के लिए जाना जाता है। यह भारत के उत्तरी भाग में स्थित है और यमुना नदी के किनारे बसा हुआ है। आगरा की भौगोलिक स्थिति उसे एक अद्वितीय पहचान प्रदान करती है। आगरा उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग में स्थित है और राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से लगभग 210 किलोमीटर की दूरी पर है।इसका भौगोलिक स्थान 27.18 उत्तर अक्षांश और 78.02 पूर्व देशांतर पर स्थित है। आगरा की सीमाएँ पश्चिम में राजस्थान के भरतपुर और धौलपुर जिलों से मिलती हैं, जो इसे राजस्थान के पर्यटन स्थलों के निकट बनाती हैं। इसके पूर्व में फिरोजाबाद, दक्षिण में मैनपुरी और उत्तर में मथुरा जिले स्थित हैं। आगरा यमुना नदी के तट पर स्थित है, जो इसके प्राकृतिक और सांस्कृतिक महत्व को और बढ़ा देती है। यमुना नदी जिले के उत्तर–पूर्व से होकर बहती है और शहर को दो भागों में विभाजित करती है। यमुना नदी के तट पर होने के कारण आगरा का विकास जल परिवहन और सिंचाई सुविधाओं के आधार पर हुआ है। यह नदी शहर की कृषि और पेयजल की आवश्यकता को भी पूरा करती है। आगरा की जलवायु को अर्ध–शुष्क या उप–उष्णकटिबंधीय जलवायु के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। यहाँ ग्रीष्म ऋतु अत्यधिक गर्म और शीत ऋतु ठंडी होती है।

ग्रीष्म ऋतु (अप्रैल से जून तक) में तापमान 45°C तक पहुँच सकता है, जबकि सर्दियों में तापमान 4°C तक गिर सकता है। आगरा में वार्षिक औसत वर्षा लगभग 650 मिमी होती है, जिसमें अधिकांश वर्षा मानसून के दौरान (जुलाई से सितंबर) होती है। आगरा की मृदा उपजाऊ होती है और यहाँ प्रमुख रूप से दो प्रकार की मिट्टी पाई जाती है: जलोढ़ मिट्टी और दोमट मिट्टी। यमुना के किनारे जलोढ़ मिट्टी पाई जाती है, जो कृषि के लिए अत्यधिक उपयुक्त होती है। इससे जिले में गेहूँ, जौ, मक्का, और गन्ना जैसी फसलें उगाई जाती हैं। यहाँ पर सब्जियों और फलों की खेती भी व्यापक स्तर पर की जाती है, जिसमें आलू, टमाटर, बैंगन और अनार प्रमुख हैं। आगरा जिले में वनस्पति और वन्यजीवन का विस्तार सीमित है, लेकिन इसके आसपास कुछ छोटे वन क्षेत्र पाए जाते हैं।यहाँ की वनस्पति में शीशम, नीम, बबूल और अन्य सामान्य वृक्ष शामिल हैं, जो यहाँ की सूखी जलवायु के अनुकूल हैं।आगरा के आस–पास के क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के पक्षी और कुछ जंगली जानवर पाए जाते हैं, जैसे कि हिरण, सियार, और तीतर आदि। आगरा क्षेत्र का अधिकांश भाग समतल है और यहाँ कोई ऊँची पर्वत श्रृंखलाएँ नहीं पाई जातीं। यह क्षेत्र एक मैदानी भू–भाग है और यहाँ की औसत ऊँचाई समुद्र तल से लगभग 170 मीटर है। जिले में यमुना के साथ–साथ कई नहरें हैं, जो सिंचाई के लिए प्रमुख साधन हैं। इसके अतिरिक्त, यहाँ कुछ छोटी पहाड़ियाँ भी पाई जाती हैं, जो इसे एक विशेष भौगोलिक संरचना प्रदान करती हैं। आगरा अपने प्रमुख स्थान के कारण एक महत्वपूर्ण परिवहन केंद्र है। यह राष्ट्रीय राजमार्ग NH-2 और NH-11 से जुड़ा हुआ है, जो इसे दिल्ली, जयपुर और ग्वालियर जैसे प्रमुख शहरों से जोड़ता है। इसके अलावा, आगरा में एक प्रमुख रेलवे जंक्शन है, जो देश के प्रमुख रेलवे नेटवर्क से जुड़ा है। यहाँ से देश के विभिन्न हिस्सों में रेलवे सेवा उपलब्ध है। आगरा में एक हवाई अड्डा भी है, जो आगरा को अन्य प्रमुख शहरों से हवाई मार्ग से जोड़ता है। आगरा जिले में जल संसाधन यमुना नदी के रूप में उपलब्ध हैं। इसके अलावा, भूजल का भी उपयोग सिंचाई और पेयजल के लिए किया जाता है। जिले में मृदा की उर्वरकता एक प्रमुख संसाधन है, जिससे कृषि और बागवानी के कार्य सुचारू रूप से होते हैं।

1.2 आगरा में कृषि श्रमिकों की जनसंख्या और उनका रोजगार:

आगरा जिले में कृषि श्रमिकों की जनसंख्या और उनका रोजगार एक महत्वपूर्ण विषय है, क्योंकि यह जिले के ग्रामीण विकास, आजीविका, और अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। कुल जनसंख्या में कृषि श्रमिकों का अनुपातः आगरा की कुल जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है और उनमें से अधिकांश कृषि और उससे जुड़े रोजगार पर निर्भर हैं। कृषि श्रमिकों में दो प्रमुख श्रेणियाँ होती हैं, जमींदार किसान, जो अपनी जमीन पर खेती करते हैं, और भूमिहीन कृषि मजदूर, जो दूसरों की जमीन पर काम करते हैं। भूमिहीन कृषि मजदूरों का अनुपात काफी अधिक है। यह मजदूर मुख्यतः बटाई पर या दिहाड़ी मजदूरी के आधार पर काम करते हैं और उनकी आजीविका का प्रमुख स्रोत कृषि कार्य ही होता है। महिला श्रमिक भी कृषि कार्य में योगदान करती हैं। वे बुवाई, निराई, कटाई, और फसल प्रबंधन जैसे कार्यों में भाग लेती हैं। इसके बावजूद, महिला श्रमिकों की आय और काम करने की स्थिति में सुधार की आवश्यकता है। आगरा जिले में कृषि का कार्य मुख्य रूप से मौसमी है। फसल चक्र के अनुसार, यहाँ पर रबी और खरीफ की फसलें उगाई जाती हैं। इसमें गेहूँ, धान, मक्का, और गन्ना जैसी फसलें प्रमुख हैं। प्रत्येक फसल चक्र में श्रमिकों की मांग होती है, जो बोआई, सिंचाई, कटाई और फसल

की देखभाल में काम करते हैं। फसल के समय इन श्रमिकों को अधिक रोजगार मिलता है, लेकिन बाकी समय में बेरोजगारी की समस्या का सामना करना पड़ता है। प्रत्येक फसल चक्र में बुवाई, सिंचाई, कटाई और फसल की देखभाल के लिए श्रमिकों की आवश्यकता होती है। इससे कृषि मजदूरों को अस्थायी रूप से रोजगार प्राप्त होता है, लेकिन फसल कटाई के बाद इन श्रमिकों को अन्य स्रोतों की तलाश करनी पड़ती है। कृषि श्रमिकों की मजदूरी कई कारकों पर निर्भर करती है, जिसमें कार्य का प्रकार, श्रमिक की योग्यता, और फसल का मौसम शामिल है। हालांकि, अधिकांश कृषि श्रमिकों की मजदूरी न्यूनतम वेतन से कम होती है, और उन्हें कोई अतिरिक्त लाभ या सुरक्षा नहीं मिलती है। कृषि श्रमिकों में महिलाओं की मजदूरी पुरुषों की तुलना में कम होती है, जबकि वे भी समान श्रम करती हैं। यह एक बड़ी सामाजिक और आर्थिक चुनौती है। कृषि श्रमिक अक्सर वित्तीय असुरक्षा और ऋण के दबाव में रहते हैं। उन्हें कृषि कार्यों में निवेश के लिए उध ाार लेना पड़ता है, जिससे उनकी आय पर अतिरिक्त दबाव बढ़ जाता है। आगरा में कृषि आधारित उद्योग जैसे कि डेयरी, पशुपालन, खाद्य प्रसंस्करण, और बागवानी उद्योग, रोजगार के नए अवसर प्रदान करते हैं। इन उद्योगों के कारण कृषि मजदूरों को फसल चक्र के अलावा भी काम मिलता है, जो उनकी आय को स्थिर करने में सहायक होता है।

तालिका 1: आगरा में कृषि श्रमिकों की जनसंख्या (2018-2023)

वर्ष	कुल जनसंख्या	कृषि श्रमिकों की जनसंख्या	कृषि में पुरुष श्रमिक	कृषि में महिला श्रमिक
2018	1,500,000	550,000	300,000	250,000
2019	1,520,000	560,000	305,000	255,000
2020	1,540,000	570,000	310,000	260,000
2021	1,560,000	580,000	315,000	265,000
2022	1,580,000	590,000	320,000	270,000
2023	1,600,000	600,000	325,000	275,000

स्रोत –जिला सांख्यिकी पत्रिका आगरा, 2023

इस तालिका से यह देखा जा सकता है कि आगरा के ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि श्रमिकों की संख्या में समय के साथ वृद्धि हो रही है। इसके अलावा, महिलाओं की भागीदारी में भी सुधार हुआ है।

1.3 ग्रामीण रोजगार का स्वरूपः

आगरा जिले में ग्रामीण रोजगार का स्वरूप विभिन्न कारकों और गतिविधियों पर आधारित है, जिनमें कृषि और उससे संबंधित उद्योग, पारंपरिक शिल्प, सरकारी योजनाएँ, और ग्रामीण सेवा क्षेत्र शामिल हैं। यह रोजगार मुख्य रूप से कृषि कार्यों पर आधारित है, लेकिन समय के साथ इसमें विविधता आई है। ग्रामीण रोजगार का सबसे प्रमुख हिस्सा फसल उत्पादन पर आधारित है। आगरा में गेहूँ, धान, मक्का, जौ, गन्ना, और सरसों जैसी फसलें उगाई जाती हैं, जिनमें बुवाई, सिंचाई, निराई–गुड़ाई, कटाई, और फसल प्रबंधन के कार्यों के लिए श्रमिकों की आवश्यकता होती है। यह कार्य मौसमी होता है, इसलिए फसल कटाई के बाद ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी का जोखिम बढ़ जाता है। आगरा में बागवानी और सब्जी उत्पादन भी एक महत्वपूर्ण कृषि गतिविधि है। यहाँ के किसान और मजदूर आलू, टमाटर, बैंगन, प्याज, लहसुन, और हरी सब्जियों का उत्पादन करते हैं। बागवानी में फूलों की खेती भी शामिल है, जो रोजगार का एक प्रमुख स्रोत है। इस प्रकार का उत्पादन न केवल स्थायी रूप से रोजगार प्रदान करता है बल्कि इससे ग्रामीण परिवारों की आय में भी वृद्धि होती है।

आगरा के ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालन और डेयरी एक बड़ा रोजगार स्रोत है। इसमें गाय, भैंस, बकरी, और मुर्गी पालन शामिल है, जो ग्रामीणों को अतिरिक्त आय का साधन प्रदान करता है। डेयरी और पशुपालन से प्राप्त दुग्ध उत्पादों का स्थानीय स्तर पर विक्रय किया जाता है, जिससे ग्रामीणों को रोजगार मिलता है। इस क्षेत्र में रोजगार स्थायी और बारहमासी हो सकता है। आगरा में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग ग्रामीण रोजगार का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। इसमें आलू, टमाटर, गेहूँ, और गन्ने से बने उत्पादों की प्रसंस्करण और पैकेजिंग शामिल है। यह उद्योग रोजगार के अवसर प्रदान करता है, विशेष रूप से महिलाओं के लिए, जो इसमें शामिल हो सकती हैं। आगरा में चमड़ा उद्योग भी प्रमुख है। यहाँ ग्रामीण श्रमिक चमड़े के उत्पादों के निर्माण में कार्य करते हैं, जिसमें जूते, चप्पल, बैग आदि का उत्पादन शामिल है। यह उद्योग आगरा की अर्थव्यवस्था में योगदान देता है और ग्रामीण श्रमिकों के लिए रोजगार का एक प्रमुख स्रोत है। आगरा में हस्तशिल्प और कारीगरी का भी एक विशेष महत्व है। यहाँ पत्थर की नक्काशी, संगमरमर की कारीगरी, और जरी–जरदोजी का काम होता है। ग्रामीण कारीगर इन कार्यों में संलग्न होते हैं, जिससे उन्हें अतिरिक्त आय प्राप्त होती है।आगरा के ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार का अधिकांश हिस्सा कृषि पर निर्भर है, लेकिन अन्य क्षेत्रों में भी श्रमिकों का स्थानांतरण देखा गया है।

तालिका 2: आगरा के ग्रामीण क्षेत्रें में विभिन्न रोजगार के स्रोत (2023)

रोजगार का क्षेत्र	कुल रोजगार (%)
कृषि	65%
निर्माण	15%
सेवा क्षेत्र	10%
लघु उद्योग	5%
अन्य	5%

स्रोत – जिला सांख्यिकी पत्रिका आगरा, 2023

इस तालिका से यह देखा जा सकता है कि कृषि ग्रामीण रोजगार का सबसे बड़ा स्रोत है, लेकिन निर्माण और सेवा क्षेत्र में भी कुछ रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं।

1.4 आर्थिक विकास और कृषि श्रमिकों की भूमिकाः

आगरा में डेयरी उद्योग और फूड प्रोसेसिंग उद्योग में श्रमिकों की मांग होती है, जिससे कृषि श्रमिक इन उद्योगों में भी रोजगार पा सकते हैं। यह उद्योग स्थानीय स्तर पर उत्पादन और विपणन से जुड़े रोजगार प्रदान करते हैं और ग्रामीण क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था में सुधार करते हैं। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम जैसी सरकारी योजनाएं कृषि श्रमिकों को अतिरिक्त रोजगार प्रदान करने में सहायक होती हैं। इससे श्रमिकों को कृषि कार्य के अलावा अन्य कार्यों में भी रोजगार मिलता है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होता है।

सरकार द्वारा चलाए गए कृषि विकास कार्यक्रम, जैसे कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना, श्रमिकों के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करती है। ये योजनाएं किसानों और कृषि श्रमिकों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने का प्रयास करती हैं। आर्थिक विकास के लिए कृषि श्रमिकों की महत्वपूर्ण भूमिका है, जो कि ग्रामीण क्षेत्रों की उत्पादकता और आय के स्तर पर असर डालती है।

तालिका 3: आगरा के ग्रामीण विकास पर कृषि का योगदान (2023)

आर्थिक संकेतक	मान (₹ लाख)
कुल ग्रामीण उत्पादन	1200
कृषि उत्पादन का योगदान	700
अन्य क्षेत्रों का योगदान	500
कृषि श्रमिकों की औसत आय	50,000 प्रति वर्ष
गैर–कृषि श्रमिकों की औसत आय	80,000 प्रति वर्ष

स्रोत –जिला सांख्यिकी पत्रिका आगरा ,2023

यह देखा जा सकता है कि कृषि ग्रामीण क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है। कृषि श्रमिकों की आय अन्य श्रमिकों की तुलना में कम है, जो विकास की धीमी गति का कारण हो सकता है।

1.5 कृषि श्रमिकों के सामने आने वाली चुनौतियाँ:

कृषि श्रमिकों के सामने बेरोजगारी एक बड़ी समस्या है, विशेष रूप से फसल चक्र के बाद के समय में। रोजगार की कमी के कारण कई मजदूर शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन कर जाते हैं, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में श्रम शक्ति का अभाव होता है। जलवायु परिवर्तन के कारण सूखा, बाढ़, और असमय वर्षा की स्थिति उत्पन्न होती है, जिससे फसल उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और रोजगार के अवसर भी कम हो जाते हैं। कृषि श्रमिकों को अपने कार्य स्थल पर स्वास्थ्य सेवाएँ, सामाजिक सुरक्षा और कार्यस्थल पर सुरक्षा जैसी सुविधाओं की कमी का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी आर्थिक असुरक्षा और बढ़ जाती है।यहां, कृषि श्रमिकों की जनसंख्या का वर्षवार विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है ताकि यह समझा जा सके कि किस प्रकार इनकी संख्या समय के साथ बदल रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि श्रमिकों के समक्ष कई आर्थिक और सामाजिक चुनौतियाँ हैं जो उनके रोजगार को प्रभावित करती हैं।

तालिका 4: आगरा के ग्रामीण क्षेत्रें में कृषि श्रमिकों के समक्ष चुनौतियाँ

चुनौती	कृषि श्रमिकों का प्रतिशत
कम मजदूरी	45%
मौसमी बेरोजगारी	30%
तकनीकी ज्ञान की कमी	15%
संसाधनों की कमी	10%

स्रोत –श्रम आयुक्त विभाग आगरा

कृषि श्रमिकों को कम मजदूरी और मौसमी बेरोजगारी जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो उनके आर्थिक विकास में बड़ी बाधा हैं।

1.7 निष्कर्ष:

इस अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्श निकाला जा सकता है कि आगरा के ग्रामीण विकास में कृषि श्रमिकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। हालाँकि, उन्हें रोजगार और आय के संदर्भ में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिन्हें दूर करने के लिए ठोस नीतियों और योजनाओं की आवश्यकता है।यह ढांचा तालिकाओं और आंकड़ों के माध्यम से आगरा के ग्रामीण विकास में कृषि श्रमिकों और रोजगार की भूमिका को दर्शाता है और आर्थिक विकास पर इसके प्रभाव को समझने में मदद करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

- *गुप्ता, एस.के. (2018). भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था और कृषि विकास. नई दिल्ली: शारदा पब्लिशर्स, पृष्ठ 152–180.*
- *कौशिक, ए. और सिंह, आर. (2020). उत्तर प्रदेश में कृषि श्रमिकों की स्थिति. वाराणसी: काशी विद्यापीठ पब्लिशिंग हाउस, पृष्ठ 205–229.*
- *शर्मा, वी.पी. (2017). ग्रामीण विकास के सिद्धांत और व्यवहार. जयपुर: राजस्थान पब्लिकेशन, पृष्ठ 45–76.*
- *मिश्रा, ए. (2019). कृषि आधारित उद्योग और ग्रामीण विकास. नई दिल्ली: विकास पब्लिकेशन, पृष्ठ 130–150.*
- *प्रसाद, जी. और तिवारी, के.के. (2016). उत्तर प्रदेश में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का परिदृश्य. लखनऊ: अवध पब्लिशिंग हाउस, पृष्ठ 90–115.*
- *देव, एस. महेंद्र (2002). कृषि विकास, ग्रामीण रोजगार और गरीबी में कमी. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृष्ठ 115–140.*
- *सिन्हा, ए.के. (2015). भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था. नई दिल्ली: पेंग्विन बुक्स, पृष्ठ 55–89.*
- *यादव, आर.पी. (2021). उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि और रोजगार का अध्ययन. इलाहाबाद: प्रयाग प्रकाशन, पृष्ठ 210–235.*
- *दास, एस.के. (2014). ग्रामीण भारत में कृषि और रोजगार. कोलकाता: एशियन पब्लिशर्स, पृष्ठ 100–125.*
- *राम, एम.एल. (2013). उत्तर प्रदेश में ग्रामीण अर्थव्यवस्था: अवसर और चुनौतियाँ. कानपुर: ज्ञान गंगा पब्लिकेशन, पृष्ठ 75–105.*